राजनीति विज्ञान के अध्ययन मे व्यवहारवादी दृष्टिकोण का विश्लेषण कीजिए

या

व्यवहारवाद का अर्थ बताइए। एवं उनके प्रकार का वर्णन कीजिए।

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- व्यवहारवाद से आशय
- व्यवहारवाद का विकास
- व्यवहारवाद के विशेषताएँ
- व्यवहारवाद के तत्वो एवं लक्ष्यो के प्रकार
- निष्कर्ष
- सन्दर्भ ग्रन्थ

प्रस्तावना :—

"व्यवहारवादी क्रान्ति परम्परागत राजनीति शास्त्र की उपलब्धियों के प्रति असन्तोष का परिणाम है, जिसका उद्देश्य राजनीतिशास्त्र को अधिक वैज्ञानिक बनाना है।"

—— रॉबर्ट ए. डैल

व्यवहारवादी दृष्टिकोण राजनीतिक तथ्यों की व्याख्या व विश्लेषण का विशेष तरीका है, जिसे (A) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिकी राजवैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया। व्यवहारवादी राजनीतिशास्त्री व्यक्ति अथवा समूहों के राजनीतिक व्यवहार को अधिक महत्वपूर्ण व मुख्य मानते है। डेविड ईस्टन को व्यवहारवाद का जनक माना जाता है। व्यवहारवाद के बौद्धिक पूर्वज चार्ल्स ई मेरियम है।

व्यवहारवाद से आशय :—

व्यवहारवाद मानव व्यवहार को समझने की कुंजी है। व्यवहारवाद के सिद्धान्तों को समझकर हम यह समझ सकते है कि लोग जिस तरह से व्यवहार करते है, वह क्यों करते है और अपने व्यवहार और दूसरे के व्यवहार को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकते है।

व्यवहारवाद के प्रमुख विशेषताएँ :— क्रिक पैट्रिक के अनुसार :—

(1) यह इस बात पर बल देता है कि राजनीतिक अध्ययन और शोध कार्य में विश्लेषण की मौलिक इकाई संस्थाएँ न होकर व्यक्ति होना चाहिए।

(2) यह सामाजिक विज्ञानों को व्यवहारवादी विज्ञान के रूप में देखता है और राजनीति विज्ञान की अन्य समाज विज्ञानों के साथ एकता पर बल देता है।

(3) यह तथ्यों के पर्यवेक्षण, वर्गीकरण और माप के विकास और उपयोग पर बल देता है। क्योंकि सांख्यिकीय या परिमाणात्मक सूत्रीकरण का उपयोग किया जाना चाहिए।

(4) यह राजनीति विज्ञान के लक्ष्य को एक व्यवस्थित आनुभविक सिद्धांत के रूप में परिभाषित करता है।

- व्यवहारवाद के तत्वों लक्ष्यों के निम्न प्रकार

डेविड ईस्टन के अनुसार :—

(1) नियमन

(2) सत्यापन

(3) तकनीकी पद्धति : प्रविधियां

(4) परिमाणीकरण

(5) मूल्य निर्धारण

(6) व्यवस्थावद्धीकरण (क्रमबद्धता)

(7) विशुद्ध ज्ञान

(8) समग्रता (एकीकरण)

① नियमितता :—

व्यवहार में खोज किए जाने योग्य नियमितताएँ या समानताएँ पाई जाती है ये बार-बार घटित होने वाली प्रेक्षणीय क्रियाओं या गतिविधियों को बताती है। ताकि शुद्ध समान सिद्धान्तों के आधार पर वि० मानवीय व्यवहार को है। व्याख्या व भविष्य के लिए सम्भावनाएँ व्यक्त की जा सकती

② सत्यापन :—

ऐसी नियमितताओं पर आधारित निष्कर्ष अध्यापन योग्य होनी चाहिए। जैसे कोई वेता लोकप्रिय रहा या नहीं व्यवहारवादी अध्ययन पद्धति की एक विशेषता यह है कि उसके अन्तर्गत एकत्रित की गयी सामग्री का सत्यापन किया जाता है।

③ तकनीकी पद्धति (प्रविधियां) :—

व्यवहारवाद आनुभविक तरीकों, पद्धतियाँ और प्रविधियों पर जोर देता है। स्वयं अध्ययनकर्ता द्वारा उन्हें सावधानी से शुद्ध एवं परीक्षित किये जाने की आवश्यकता है। ताकि विश्लेषण कर परिणामों को अंकित कर सके।

④ परिमाणीकरण :—

उपलब्धियों के विवरण तथा आधार सामग्री के तत्व बढ़ करने तथा उसमें स्पष्टता लाने के लिए मापन और परिमाणीकरण किया जाना चाहिए।

(5) मूल्य निर्धारण :-

सामान्यतः व्यवहारवादी मूल्यों की दृष्टि से तटस्थ रहना चाहते हैं, फिर भी नैतिक मूल्यांकन के कुछ मूल्यों आदर्शों का प्रतिपादन और प्रयोग आवश्यक हो जाता है।

(6) क्रमबद्धता (व्यवस्थाबद्धीकरण) :-

अनुसन्धान आवश्यक रूप से क्रमबद्ध होना चाहिए। अध्ययन, अवलोकन, तथ्य संग्रहण, सिद्धान्त निर्माण, सत्यापन आदि सभी में क्रमबद्धता रहनी चाहिए।

(7) विशुद्ध ज्ञान :-

व्यवहारवाद का उद्देश्य राजनीति विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति एक विशुद्ध विज्ञान बनाना है। यह समाज की महत्वपूर्ण व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा की जा सकती है।

(8) समग्रता (एकीकरण) :-

व्यवहारवादियों की एक प्रमुख मान्यता यह है कि समस्त मानव व्यवहार एक ही पूर्ण इकाई है और उसका अध्ययन खण्डों में नहीं होना चाहिए।

राजनीति विज्ञान को अन्य सभी विषयों से संबंध ~~स्थापित~~ रखना चाहिए।

निष्कर्ष :-

मानव व्यवहार को अध्ययन, अवलोकन, व्याख्या निष्कर्ष आदि का आधार मानने की पद्धति व बौद्धिक आंदोलन दोनों ही हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ :—

① राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय
— डॉ. पुखराज जैन

② राजनीति विज्ञान
— राम प्रताप एण्ड संस